संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2083 | वर्ष : 2026

हिन्दी पाक्षिक

अंक : नवम्बर (प्रथम)

आस्था, प्रकाश और लोकसंस्कृति का महापर्व



मम्मी का मौन

प्रत्युश ने आवाज लगाकर रेखा से पूछा, मम्मी, सुई धागे का डिब्बा कहाँ रखा है? रेखा किचन में थी, वहीं से बोली," मेरी अलमारी में है, क्यों चाहिये?" प्रत्युश ने कारण नहीं बताया और डिब्बा लेने चला गया।

जवाब न मिलने पर रेखा आयी, प्रत्युश भी डिब्बा लेकर आ गया। रेखा ने कहा कि तुमनें बताया नहीं कि सुई धागा क्यों चाहिये? प्रत्युश ने बताया," मेरी पेंट दो जगह से थोड़ी फट गयी है तो उसे सिलना है।" मम्मी ने बेटे से कहा,' दूसरी अच्छी वाली पेंट पहन लो, इसे क्यों सिल रहे हो, वैसे भी तुम्हारी यह पेंट पुरानी हो गयी है।"

प्रत्युश ने गंभीर हंसी हंसते हुए माँ से कहा," तीन साल पहले खरीदी मेरी पेंट पुरानी हो गयी और दस साल पुरानी साड़ी, जिसे आप अभी भी सिल सिलकर पहन रही है, कल भी सिल रही थी, वह पुरानी नहीं हुई, क्यों? बेटे के प्रश्न पर मम्मी मौन थी, वैसे इसका उत्तर शायद ही किसी माँ के पास होगा। मम्मी को सवाल के साथ छोड़ प्रत्युश काम पर चला गया।



वापस आया, हाथ में एक पैकेट था। प्रत्युश ने उसमें से लाल रंग की सुंदर चुनर निकाली और मम्मी को ओढ़ा दी और बोला कि आप माता के लिये चुनर लाना चाहती थी ना तो मैं आपके लिये ले आया। फिर मम्मी को कुर्सी पर बिठाया, उनके पैर छुए। इसके बाद स्कूटर में से थैली लाकर मम्मी की गोद में रख दी। थैली में पीले और केसरिया रंग की दो साड़ियाँ थी। साथ में एक कार्ड भी था, उसमें लिखा था," माँ पार्वती बन हर पल मुझे संभाला जिसने, माँ सरस्वती बन जीवन में मुझे बहुत कुछ सिखाया जिसने, मेरे जीवन की समस्याओं के आगे माँ दुर्गा व माँ काली बनकर खड़ी रही जो, लक्ष्मी माँ बन अपना स्नेहाशीष का धन मुझ पर बरसाया जिसने, ऐसी प्यारी मम्मी को नवरात्रि की असीम शुभकामनाएँ।"

बेटे के जज्बातों को पढ़, उसके लाये आत्मीय उपहारों को देख मम्मी की आँखें गंगा जमुना बनने से खुद को न रोक सकी।

माँ अपनी जरूरतें क्यों टाल देती है?

बेटा अपनी तीन साल पुरानी पैंट सिल रहा था, तो माँ ने कहा कि दूसरी पहन लो। लेकिन जब बेटे ने माँ की दस साल पुरानी साड़ी का जिक्र किया, जिसे वह बार-बार सिलकर पहनती थी, तो माँ मौन हो गई।

भावार्थ: माँ अक्सर अपने बच्चों की छोटी-से-छोटी जरूरत का ध्यान रखती है, लेकिन अपनी जरूरतों को चुपचाप पीछे कर देती है। वह बच्चों को अच्छी चीजें देना चाहती है, भले ही उसे खुद पुरानी चीजों से काम चलाना पड़े।

हम कई बार माँ के त्याग को इसलिए नहीं देख पाते, क्योंकि वह कभी उसका हिसाब नहीं माँगती।

माँ की सेवा केवल पैसों से नहीं, भावनाओं से भी होती है

प्रत्युश ने माँ को चुनरी और नई साड़ियाँ देकर सिर्फ उपहार नहीं दिया, बल्कि यह एहसास भी दिलाया कि उसकी मेहनत, त्याग और प्यार को कोई समझता है।

भावार्थ: माँ को महँगे उपहारों से ज्यादा खुशी तब मिलती है, जब उसके बच्चे उसकी भावनाओं को समझते हैं। कभी उसके साथ बैठना, उसकी बात सुनना, उसकी पसंद याद रखना और बिना माँगे उसकी जरूरत पूरी करना भी प्रेम जताने के सुंदर तरीके हैं।

भारतीय संस्कृति में माता-पिता की सेवा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सच्चा सम्मान केवल चरण छूने में नहीं, बल्कि उनके जीवन को प्रेम और सम्मान से भरने में है।

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com









पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,

सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो कि 'संवाद दर्शन' पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई–मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करता है कि पत्रिका आप तक पहुंच रही होगी। यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते हैं।

शेष शुभ!



वन्यजीवों के अस्तित्व पर गहराता संकट

पृथ्वी पर जीवन की विविधता मानव सभ्यता के अस्तित्व का आधार है। वन, नदियाँ, महासागर, घास के मैदान और आर्द्रभूमियाँ न केवल वन्यजीवों को आश्रय प्रदान करती हैं, बल्कि भोजन, स्वच्छ जल, जलवायु संतुलन तथा आजीविका के लिए भी आवश्यक हैं। किंतु तीव्र आर्थिक विकास, प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन और पर्यावरणीय असंतुलन ने जैव विविधता पर गंभीर संकट उत्पन्न कर दिया है। लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट वन्यजीव आबादी में गिरावट के माध्यम से इसी संकट को उजागर करती है। यह केवल कुछ प्रजातियों के कम होने की कहानी नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव के बीच बिगड़ते संबंधों का प्रतिबिंब है।

रिपोर्ट में दर्ज वन्यजीव आबादी में गिरावट का अर्थ पृथ्वी पर मौजूद सभी पशुओं की कुल संख्या में समान अनुपात में कमी आना नहीं है। यह मुख्यतः निगरानी की गई स्तनधारी, पक्षी, सरीसृप, उभयचर और मछली प्रजातियों की आबादी में समय के साथ हुए औसत परिवर्तन को दर्शाती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी क्षेत्र में बाघों, पक्षियों और मछलियों की आबादी लगातार घट रही है, तो यह उनके प्राकृतिक आवास, भोजन की उपलब्धता और प्रजनन परिस्थितियों में प्रतिकूल बदलाव का संकेत हो सकता है। इसी प्रकार, मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र में आबादी की तीव्र गिरावट नदियों, झीलों और आर्द्रभूमियों पर बढ़ते दबाव को दर्शाती है। हालाँकि, आबादी में गिरावट और प्रजातियों के विलुप्त होने के बीच अंतर है। कुछ प्रजातियों की संख्या घटने का अर्थ यह नहीं कि वे विलुप्त हो चुकी हैं। इसलिए वन्यजीवों की घटती आबादी को प्रकृति के स्वास्थ्य का चेतावनी संकेतक समझना चाहिए, न कि सभी जीवों के कुल विनाश का प्रत्यक्ष माप।

जैव विविधता के ह्रास का सबसे प्रमुख कारण प्राकृतिक आवासों का विनाश और विखंडन है। वनों की कटाई, कृषि भूमि का विस्तार, खनन, शहरीकरण, सड़क निर्माण तथा

औद्योगिक परियोजनाएँ वन्यजीवों के प्राकृतिक आवासों को सीमित कर देती हैं। जब जंगल छोटे-छोटे हिस्सों में बँट जाते हैं, तो जानवरों की आवाजाही, प्रजनन और भोजन प्राप्त करने की क्षमता प्रभावित होती है। भारत में वन क्षेत्रों के निकट मानव बस्तियों और आधारभूत संरचनाओं का विस्तार हाथियों तथा तेंदुओं के साथ मानव-वन्यजीव संघर्ष को बढ़ा सकता है। प्राकृतिक आवासों का विनाश केवल जीवों को आश्रय से वंचित नहीं करता, बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र की खाद्य श्रृंखला और प्राकृतिक संतुलन को भी कमजोर करता है।

प्राकृतिक संसाधनों का अतिदोहन भी जैव विविधता के लिए गंभीर चुनौती है। अत्यधिक शिकार, अवैध वन्यजीव व्यापार, अनियंत्रित मछली पकड़ना तथा लकड़ी का अत्यधिक दोहन अनेक प्रजातियों के अस्तित्व को खतरे में डालते हैं। जब किसी प्रजाति से उसकी प्राकृतिक पुनरुत्पादन क्षमता से अधिक संसाधन प्राप्त किए जाते हैं, तो उसकी आबादी में गिरावट आने लगती है। भारत में बाघों के अंगों, पैंगोलिन के शल्कों और अन्य वन्यजीव उत्पादों का अवैध व्यापार इस समस्या की गंभीरता को दर्शाता है। इसी प्रकार, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र में अत्यधिक मत्स्य दोहन खाद्य श्रृंखला को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, वन्यजीव उत्पादों की बढ़ती माँग और अवैध व्यापार के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क संरक्षण संबंधी प्रयासों को कमजोर करते हैं।



जलवायु परिवर्तन जैव विविधता के संकट को और गहरा कर रहा है। वैश्विक तापवृद्धि, वर्षा चक्र में परिवर्तन, सूखा, बाढ़, समुद्र-स्तर में वृद्धि तथा महासागरों का अम्लीकरण वन्यजीवों के अस्तित्व को प्रभावित करते हैं। तापमान में बदलाव से प्रजातियों के प्रजनन काल, प्रवास और भोजन की उपलब्धता में परिवर्तन हो सकता है। समुद्री तापमान बढ़ने से प्रवाल विरंजन की घटनाएँ बढ़ती हैं, जिससे प्रवाल भित्तियों पर निर्भर अनेक जीव प्रभावित होते हैं। हिमालयी क्षेत्रों में बदलती जलवायु पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र और वहाँ रहने वाली प्रजातियों के लिए नई चुनौतियाँ उत्पन्न करती है। इस प्रकार, जलवायु परिवर्तन पहले से ही कमजोर पारिस्थितिकी तंत्रों पर अतिरिक्त दबाव डालता है।

प्रदूषण भी जैव विविधता के ह्रास का एक प्रमुख कारण है। औद्योगिक अपशिष्ट, कीटनाशक, रासायनिक उर्वरक, प्लास्टिक तथा सीवेज मिट्टी और जल की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। कृषि क्षेत्रों से बहकर आने वाले रसायन जल निकायों में ऑक्सीजन की कमी पैदा कर सकते हैं, जिससे मछलियों और अन्य जलीय जीवों के लिए जीवित रहना कठिन हो जाता है। प्लास्टिक प्रदूषण समुद्री कछुओं, पक्षियों और मछलियों के लिए विशेष रूप से हानिकारक है। इसके अतिरिक्त, प्रकाश और ध्वनि प्रदूषण वन्यजीवों के व्यवहार, संचार तथा प्रजनन प्रक्रियाओं को बाधित कर सकते हैं। आक्रामक विदेशी प्रजातियाँ भी स्थानीय जैव विविधता को नुकसान पहुँचाती हैं। भारत में लैंटाना जैसी आक्रामक वनस्पति कुछ वन क्षेत्रों में स्थानीय वनस्पतियों के पुनर्जनन को प्रभावित करती है

और प्राकृतिक आवासों की संरचना में बदलाव लाती है।

जैव विविधता संरक्षण के लिए सर्वप्रथम प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा और पारिस्थितिकी तंत्रों के पुनर्स्थापन को प्राथमिकता देनी चाहिए। वनों, आर्द्रभूमियों, घास के मैदानों, मैंग्रोव और प्रवाल भित्तियों का संरक्षण आवश्यक है। संरक्षित क्षेत्रों के साथ वन्यजीव गलियारों का विकास किया जाना चाहिए, ताकि जानवर अलग-थलग आबादियों के बीच आवागमन कर सकें। भारत में प्रोजेक्ट टाइगर ने बाघों और उनके प्राकृतिक आवासों के संरक्षण को महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान किया है। इसी प्रकार, क्षतिग्रस्त वनों का स्थानीय प्रजातियों के माध्यम से पुनर्स्थापन तथा नदियों और आर्द्रभूमियों का पुनर्जीवन जैव विविधता की रक्षा में सहायक हो सकता है।

संरक्षण के प्रयासों को प्रभावी बनाने के लिए वैज्ञानिक निगरानी और अनुसंधान भी आवश्यक हैं। कैमरा ट्रैप, उपग्रह आधारित निगरानी, डीएनए विश्लेषण तथा नियमित जनसंख्या सर्वेक्षण से प्रजातियों की स्थिति का बेहतर आकलन किया जा सकता है। निगरानी में उन प्रजातियों और पारिस्थितिकी तंत्रों को भी शामिल करना चाहिए जिनके बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं है। साथ ही, स्थानीय और आदिवासी समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए। संयुक्त वन प्रबंधन, संरक्षण आधारित आजीविका, पर्यावरण पर्यटन तथा मानव-वन्यजीव संघर्ष से प्रभावित परिवारों को उचित मुआवजा प्रदान करना संरक्षण के प्रति विश्वास बढ़ा सकता है। कृषि, उद्योग और मत्स्य पालन में सतत पद्धतियों को अपनाना, प्लास्टिक कचरे को कम करना तथा प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना भी आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, वन्यजीव संरक्षण से



संबंधित कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन, अवैध व्यापार पर नियंत्रण और विकास परियोजनाओं का निष्पक्ष पर्यावरणीय आकलन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता रूपरेखा देशों को जैव विविधता के संरक्षण, पारिस्थितिकी तंत्रों के पुनर्स्थापन और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग के लिए साझा दिशा प्रदान करती है। इसके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त वित्तपोषण, तकनीकी सहयोग और जवाबदेही आवश्यक हैं।

अंततः, वन्यजीव आबादी में गिरावट प्रकृति के साथ बढ़ते असंतुलन का गंभीर संकेत है। इसका प्रभाव केवल वन्यजीवों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि खाद्य सुरक्षा, जल उपलब्धता, जलवायु स्थिरता और मानव कल्याण को भी प्रभावित करता है। इसलिए संरक्षण को विकास के विरोध के रूप में नहीं, बल्कि सतत विकास की अनिवार्य शर्त के रूप में देखा जाना चाहिए। वैज्ञानिक प्रमाण, प्रभावी नीतियाँ, स्थानीय समुदायों की भागीदारी और जिम्मेदार उपभोग को एक साथ आगे बढ़ाकर ही जैव विविधता के ह्रास को रोका जा सकता है। प्रकृति की रक्षा केवल भविष्य की पीढ़ियों के प्रति हमारा दायित्व नहीं, बल्कि वर्तमान मानव समाज के अस्तित्व और समृद्धि की भी आवश्यकता है।

दीपावली से छठ: आस्था, प्रकाश और लोकसंस्कृति का महापर्व

भारत त्योहारों का देश है। यहाँ पर्व केवल उत्सव मनाने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों के संवाहक भी हैं। भारतीय जनजीवन में दीपावली और छठ का विशेष स्थान है। दीपावली जहाँ अंधकार पर प्रकाश, अन्याय पर न्याय और निराशा पर आशा की विजय का संदेश देती है, वहीं छठ पर्व प्रकृति, सूर्य और जल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की अनुपम परंपरा है। विशेषकर बिहार की धरती पर दीपावली से छठ तक का समय केवल त्योहारों का सिलसिला नहीं, बल्कि लोकजीवन की आत्मा से जुड़ा एक सांस्कृतिक महोत्सव है।

दीपावली: प्रकाश के साथ सद्भाव का संदेश

दीपावली भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख पर्व है। भगवान श्रीराम के चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटने की स्मृति से जुड़ी इसकी लोकप्रिय मान्यता हमें सत्य, मर्यादा और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। देश के विभिन्न हिस्सों में यह पर्व अलग-अलग धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के साथ मनाया जाता है। कहीं इसे श्रीराम के आगमन के उल्लास के रूप में, तो कहीं माता लक्ष्मी की पूजा, समृद्धि और शुभारंभ के अवसर के रूप में मनाया जाता है।

दीपावली का वास्तविक अर्थ केवल घरों को दीपों से सजाना नहीं है। इसका गहरा संदेश मन के भीतर व्याप्त अज्ञान, ईर्ष्या, घृणा और अहंकार के अंधकार को दूर करना भी है। मिट्टी के छोटे-छोटे दीपक हमें याद दिलाते हैं कि प्रकाश फैलाने के लिए विशाल साधनों की आवश्यकता नहीं होती। एक छोटा-सा दीप भी अंधकार को चुनौती दे सकता है।

आज दीपावली के स्वरूप में आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। बाजारों की चकाचौंध, आकर्षक सजावट और उपहारों के आदान-प्रदान ने त्योहार को नया रूप दिया है। लेकिन इसके साथ ही अत्यधिक खर्च, दिखावे की



प्रवृत्ति, पटाखों से होने वाला वायु और ध्वनि प्रदूषण तथा कचरे की समस्या भी बढ़ी है। ऐसे में आवश्यक है कि हम दीपावली को सादगी, संवेदनशीलता और पर्यावरण संरक्षण के साथ मनाएँ। मिट्टी के दीप जलाएँ, स्थानीय कारीगरों के उत्पाद खरीदें और जरूरतमंद परिवारों के साथ खुशियाँ बाँटें। यही दीपावली की भावना को सार्थक बनाएगा।

छठ महापर्व: प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का अनुपम विधान

दीपावली के बाद बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और देश-विदेश में बसे भारतीय समुदायों के बीच छठ पर्व की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। लोकआस्था का यह महापर्व अपनी विशिष्टता, अनुशासन और पवित्रता के लिए प्रसिद्ध है। इसमें सूर्यदेव और छठी मैया की आराधना की जाती है। सूर्य को जीवन, ऊर्जा, प्रकाश और कृषि का आधार माना गया है। इसलिए छठ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति मनुष्य की कृतज्ञता की अभिव्यक्ति भी है।

छठ पर्व की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सादगी और कठोर अनुशासन है। व्रती पवित्रता, संयम और नियमों का पालन करते हुए पूजा करते हैं। नहाय-खाय से शुरू होकर खरना, संध्या अर्घ्य और उषा अर्घ्य तक चलने वाली इसकी परंपरा मनुष्य को धैर्य, आत्मसंयम और समर्पण का पाठ पढ़ाती है। व्रती डूबते सूर्य को अर्घ्य देकर अस्त होते सूर्य के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं और अगले दिन उगते सूर्य की उपासना करते हैं। यह परंपरा जीवन के दोनों पक्षों—अवसान और पुनः आरंभ—को समान आदर देने का संदेश देती है।

संध्या अर्घ्य के समय नदियों, तालाबों और जलाशयों के किनारे उमड़ती श्रद्धालुओं की भीड़ एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती है। सूप में सजे फल, ठेकुआ, नारियल, गन्ना और अन्य प्रसाद लोकजीवन की सहजता और ग्रामीण संस्कृति की सुगंध को सामने लाते हैं। लोकगीतों में माँ की ममता, परिवार की मंगलकामना, प्रकृति के प्रति आभार और जीवन के संघर्षों की अभिव्यक्ति सुनाई देती है। छठ के गीत पीढ़ियों से चली आ रही सांस्कृतिक स्मृतियों को जीवित रखते हैं।

सामाजिक समरसता और लोकसंस्कृति का उत्सव

छठ पर्व की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता सामाजिक एकता है। घाटों की सफाई से लेकर रास्तों की व्यवस्था, रोशनी, पेयजल और सुरक्षा तक, अनेक कार्य सामूहिक सहयोग से पूरे किए जाते हैं। लोग जाति, वर्ग और आर्थिक स्थिति के भेद से ऊपर उठकर एक-दूसरे की सहायता करते हैं। यह पर्व बताता है कि समाज की वास्तविक शक्ति आपसी विश्वास, सहयोग और साझा जिम्मेदारी में निहित है।

बिहार के लाखों लोग रोजगार, शिक्षा और व्यवसाय के कारण दूसरे राज्यों तथा विदेशों में रहते हैं। छठ के अवसर पर घर लौटने की उनकी इच्छा इस पर्व के भावनात्मक महत्त्व को दर्शाती है। जो लोग वापस नहीं आ पाते, वे भी जहाँ रहते हैं, वहीं श्रद्धा के साथ पूजा करते हैं। इस प्रकार छठ भौगोलिक दूरियों को कम करके लोगों को अपनी मिट्टी, भाषा, परिवार और सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है।

महिलाओं की भूमिका भी इस पर्व में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। व्रती महिलाएँ कठिन नियमों का पालन करते हुए परिवार और समाज के कल्याण की कामना करती हैं। हालाँकि, छठ की परंपरा में पुरुष व्रती भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह पर्व समर्पण और आस्था के साथ-साथ परिवार के प्रति उत्तरदायित्व तथा सामूहिक सहभागिता का प्रतीक है।

पर्यावरण संरक्षण का संदेश

छठ की मूल भावना प्रकृति के प्रति सम्मान है। सूर्य, जल, मिट्टी, फल और वनस्पति इस पर्व के अभिन्न अंग हैं। इसलिए इसकी सार्थकता तभी पूर्ण होगी, जब हम नदियों और तालाबों को स्वच्छ रखने का संकल्प भी लें। पूजा के बाद प्लास्टिक, थर्मोकोल और अन्य कचरे को जलाशयों में छोड़ना पर्व की भावना के विपरीत है। स्थानीय प्रशासन, सामाजिक संगठनों और आम नागरिकों को मिलकर घाटों की स्वच्छता, सुरक्षित प्रकाश व्यवस्था और स्वच्छ जल की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

2026 में पर्वों का संदेश

वर्ष 2026 में दीपावली और छठ एक बार फिर हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का अवसर देंगे। दीपावली 8 नवंबर 2026 को और छठ पूजा का मुख्य संध्या अर्घ्य 15 नवंबर तथा उषा अर्घ्य 16 नवंबर 2026 को पड़ने की संभावना है; स्थानीय पंचांग और क्षेत्रीय परंपराओं के अनुसार तिथियों की पुष्टि कर लेनी चाहिए।

इन पर्वों के अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि उत्सव का आनंद किसी दूसरे के लिए परेशानी का कारण न बने। गरीबों और जरूरतमंदों की सहायता करें, स्थानीय कारीगरों और किसानों के उत्पादों को प्रोत्साहित करें, सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ रखें तथा बच्चों को अपनी लोकपरंपराओं का महत्त्व समझाएँ। त्योहारों का आनंद तभी पूर्ण होगा, जब उसमें प्रकृति, समाज और मानवता के प्रति संवेदनशीलता भी शामिल हो।

दीपावली और छठ भारतीय संस्कृति के दो ऐसे प्रकाशस्तंभ हैं, जो हमें जीवन के अलग-अलग आयामों का बोध कराते हैं। दीपावली अंतर्मन को प्रकाशित करने की प्रेरणा देती है, जबकि छठ प्रकृति के प्रति आभार, अनुशासन और सामूहिकता का पाठ पढ़ाता है। एक ओर दीपों की पंक्ति अंधकार को मिटाने का संदेश देती है, तो दूसरी ओर सूर्य को अर्घ्य देती श्रद्धा मानव जीवन को प्रकृति से जोड़ती है।

अभिनय का अंगार और संघर्ष से शिख़र की महागाथा

मुंबई की चमक-दमक और फिल्मी दुनिया की चकाचौंध से अलग अपनी पहचान बनाने वाले अभिनेता नाना पाटेकर का जीवन संघर्ष, संवेदनशीलता, सादगी और अद्भुत अभिनय प्रतिभा की ऐसी कहानी है, जिसे भारतीय सिनेमा लंबे समय तक याद रखेगा। 8 अक्टूबर 2026 को 75 वर्ष की उम्र में उनके निधन के साथ अभिनय की दुनिया का एक ऐसा अध्याय समाप्त हो गया, जिसमें एक कलाकार ने केवल पर्दे पर किरदार नहीं निभाए, बल्कि अपने हर किरदार में जीवन की सच्चाइयों को उतारने का प्रयास किया।

नाना पाटेकर का असली नाम विश्वनाथ पाटेकर था। उनका जन्म 1 जनवरी 1951 को महाराष्ट्र के मुरुड-जंजीरा में हुआ था। उनका बचपन आर्थिक कठिनाइयों के बीच बीता। कम उम्र में ही उन्हें जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। परिवार की जिम्मेदारियों और सीमित संसाधनों ने उन्हें संघर्ष करना सिखाया। किशोरावस्था में फिल्म पोस्टर बनाने जैसे छोटे-मोटे काम करके उन्होंने अपनी जरूरतें पूरी कीं।

कला के प्रति उनका लगाव उन्हें सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स तक ले गया। इसके बाद रंगमंच उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। मराठी थिएटर में लंबे समय तक काम करते हुए उन्होंने अभिनय की बारीकियां सीखीं। रंगमंच ने उन्हें संवाद बोलने की कला ही नहीं सिखाई, बल्कि किरदार की आत्मा को समझने और उसे अपने भीतर उतारने की क्षमता भी दी। यही कारण रहा कि जब वह फिल्मों में आए तो उनका अभिनय बनावटी नहीं लगा, बल्कि जीवन के बेहद करीब दिखाई दिया।

1978 में फिल्म 'गमन' से उनके फिल्मी सफर की शुरुआत हुई। शुरुआती वर्षों में उन्हें बड़े सितारे के रूप में पहचान नहीं मिली। उन्होंने छोटे और सहायक किरदार निभाए, लेकिन उन्होंने कभी संघर्ष से समझौता नहीं किया। धीरे-धीरे उनकी प्रतिभा फिल्मकारों और दर्शकों की नजर में आने



लगी। 1988 में 'सलाम बॉम्बे!' और उसके बाद 1989 में 'परिंदा' ने उनके करियर को नई दिशा दी। 'परिंदा' में उनके अभिनय ने यह साबित कर दिया कि नाना पाटेकर केवल एक अभिनेता नहीं, बल्कि किरदार को जीवंत कर देने वाले कलाकार हैं। इस फिल्म के लिए उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

1994 में आई 'क्रांतिवीर' ने नाना पाटेकर को उस ऊंचाई तक पहुंचाया, जहां बहुत कम अभिनेता पहुंच पाते हैं। फिल्म में उनका किरदार अन्याय और भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाने वाले व्यक्ति का था। उनकी आवाज, संवाद अदायगी और चेहरे के भावों ने दर्शकों के भीतर गहरी छाप छोड़ी। 'क्रांतिवीर' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला। 'परिंदा', 'क्रांतिवीर' और 'अग्निसाक्षी' के लिए तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार हासिल करना उनके अभिनय की असाधारण क्षमता का प्रमाण है।

नाना पाटेकर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्हें किसी एक तरह के किरदार में बांधना संभव नहीं था। वह गंभीर भूमिकाओं में जितने प्रभावशाली रहे, उतने ही सहज हास्य भूमिकाओं में भी दिखाई दिए। 'तिरंगा', 'अंगार', 'अग्निसाक्षी', 'खामोशी: द म्यूजिकल', 'शक्ति: द पावर', 'अब तक छप्पन', 'अपहरण' और 'राजनीति' जैसी फिल्मों में उनके अभिनय ने अलग-अलग रंग दिखाए। 2007 की 'वेलकम' में उदय शेट्टी का किरदार उनके अभिनय का बिल्कुल अलग पक्ष सामने लाया। गंभीर और आक्रामक भूमिकाओं के लिए पहचाने जाने वाले नाना ने इस फिल्म में हास्य का ऐसा रंग भरा कि उदय शेट्टी आज भी दर्शकों की स्मृति में जीवित है।

अभिनय के साथ नाना पाटेकर ने निर्देशन में भी अपनी प्रतिभा दिखाई। 1991 में उन्होंने 'प्रहार: द फाइनल अटैक' का निर्देशन किया। सेना और सैनिकों के जीवन के प्रति उनका लगाव भी उनके व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। उनके लिए देशभक्ति केवल पर्दे पर निभाया जाने वाला किरदार नहीं थी, बल्कि जीवन में भी उसका अपना महत्व था। कारगिल युद्ध के दौरान सैनिकों के बीच उनकी मौजूदगी ने उनके इस जुड़ाव को और स्पष्ट किया।

2016 में आई मराठी फिल्म 'नटसम्राट' में उन्होंने एक सेवानिवृत्त रंगमंच अभिनेता की भूमिका निभाई। यह भूमिका जैसे उनके अपने रंगमंचीय जीवन और अभिनय अनुभव का आईना थी। उम्र, अकेलेपन, परिवार, रिश्तों और एक कलाकार की टूटती दुनिया को उन्होंने जिस गहराई से पर्दे पर उतारा, उसने एक बार फिर साबित किया कि अभिनय में उनकी पकड़ कितनी मजबूत थी।

उनका विवाह नीलकांति पाटेकर से हुआ था। निजी जीवन में आए दुखों और पारिवारिक त्रासदियों ने उन्हें भीतर से प्रभावित किया, लेकिन उन्होंने इन परिस्थितियों को अपने काम के आड़े नहीं आने दिया। उनके व्यक्तित्व में एक ओर पर्दे पर दिखाई देने वाला आक्रोश था तो दूसरी ओर निजी जीवन में सादगी और संवेदनशीलता भी दिखाई देती थी।

फिल्मों से मिली प्रसिद्धि को उन्होंने केवल अपने तक सीमित नहीं रखा। किसानों और ग्रामीण समाज की समस्याओं के प्रति उनकी संवेदनशीलता ने उन्हें समाजसेवा की ओर भी प्रेरित किया। अभिनेता मकरंद अनासपुरे के साथ उन्होंने 'नाम' फाउंडेशन के माध्यम से किसानों और जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए काम किया। यह उनके व्यक्तित्व का वह पक्ष था, जो कैमरे की चमक से दूर था, लेकिन उनके जीवन को और अधिक अर्थ देता था। 2013 में भारत सरकार ने कला और सिनेमा में उनके योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया।

8 अक्टूबर 2026 को नाना पाटेकर के निधन की खबर ने फिल्म जगत और उनके करोड़ों प्रशंसकों को स्तब्ध कर दिया। गोवा स्थित उनके आवास पर तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित किया। उनके निधन के साथ केवल एक अभिनेता नहीं गया, बल्कि एक ऐसी अभिनय परंपरा का एक महत्वपूर्ण अध्याय समाप्त हुआ, जिसमें संवाद से अधिक भावनाएं बोलती थीं और चेहरे से अधिक आंखें कहानी कहती थीं। महाराष्ट्र सरकार द्वारा उन्हें राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दिया जाना उनके योगदान के प्रति सम्मान का प्रतीक रहा।

नाना पाटेकर की कहानी केवल एक फिल्म अभिनेता की सफलता की कहानी नहीं है। यह उस इंसान की कहानी है जिसने अभावों के बीच शुरुआत की, पोस्टर बनाए, रंगमंच पर संघर्ष किया, फिल्मों में छोटे किरदार निभाए और धीरे-धीरे अपनी प्रतिभा के बल पर राष्ट्रीय पुरस्कारों तथा पद्मश्री तक का सफर तय किया। उन्होंने यह भी साबित किया कि महान बनने के लिए केवल प्रसिद्ध होना जरूरी नहीं, बल्कि अपने काम के प्रति ईमानदार होना जरूरी है।

'परिंदा', 'क्रांतिवीर', 'तिरंगा', 'अग्निसाक्षी', 'अब तक छप्पन', 'अपहरण', 'राजनीति', 'वेलकम' और 'नटसम्राट' जैसी फिल्मों में उनके निभाए किरदार आने वाली पीढ़ियों को उनके अभिनय की ताकत का एहसास कराते रहेंगे। उनकी आवाज में एक अलग वजन था, संवादों में एक अलग धार थी और अभिनय में ऐसी सच्चाई थी कि दर्शक पर्दे पर किरदार नहीं, बल्कि एक जीवंत इंसान को महसूस करते थे।देसी उत्पाद खोजें

नाना पाटेकर चले गए, लेकिन उनके किरदार नहीं जाएंगे। उनकी आवाज, उनका अभिनय, उनकी सादगी और संघर्ष की कहानी भारतीय सिनेमा की स्मृतियों में लंबे समय तक जीवित रहेगी। एक ऐसा कलाकार, जिसने अपने जीवन से यह संदेश दिया कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, प्रतिभा, मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर इंसान अपनी पहचान खुद बना सकता है।

डिजिटल क्रांति का काला सच: ई-कचरे का बढ़ता खतरा

आज विज्ञान और तकनीक का युग है। विज्ञान और तकनीक के इस दौर में मोबाइल फोन, कंप्यूटर, लैपटॉप, टेलीविजन, चार्जर, बैटरी, प्रिंटर और अन्य विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुके हैं। लेकिन जब ये उपकरण पुराने हो जाते हैं या काम करना बंद कर देते हैं, तो इनसे ई-कचरा पैदा होता है। गौरतलब है कि खराब मोबाइल फोन के अलावा पुराने ईयरफोन, यूएसबी केबल, रिमोट, खिलौने, छोटे पंखे और बिजली से चलने वाले अन्य उपकरण भी ई-कचरे में शामिल हैं। आज धरती पर ई-कचरे की मात्रा लगातार बढ़ रही है और यह पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी समस्या बन गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यदि इन उपकरणों का समय पर सही तरीके से निपटान नहीं किया जाए, तो ये मिट्टी, पानी, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा बन सकते हैं। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि पुराने और बेकार इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के सुरक्षित निपटान, पुनर्चक्रण और पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए हर साल 14 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय ई-कचरा दिवस मनाया जाता है। वास्तव में, इस दिवस को मनाने के पीछे का मुख्य उद्देश्य लोगों को यह समझाना है कि पुराने मोबाइल, छोटे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, केबल और बैटरी को सामान्य कूड़े में फेंकने के बजाय उचित संग्रह केंद्रों तक पहुँचाना चाहिए, ताकि उनका सुरक्षित पुनर्चक्रण किया जा सके। इस दिवस की शुरुआत वर्ष 2018 में हुई थी। इसकी शुरुआत अपशिष्ट विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण फोरम ने की थी। वास्तव में, यह एक अंतरराष्ट्रीय गैर-लाभकारी संगठन है, जो विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक कचरे के उचित प्रबंधन और पुनर्चक्रण को बढ़ावा देता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इस संगठन की स्थापना वर्ष 2002 में बेल्जियम की राजधानी



ब्रुसेल्स में हुई थी।

हाल फिलहाल, इसमें कोई संदेह या दोराय नहीं है कि विज्ञान और तकनीक ने हमारे जीवन को सरल और सुविधाजनक बनाया है, लेकिन इनसे जुड़े उपकरणों का गलत तरीके से निपटान पर्यावरण के लिए गंभीर समस्या बन सकता है। इलेक्ट्रॉनिक कचरे में सीसा और पारा जैसे हानिकारक पदार्थ हो सकते हैं, जो मिट्टी और पानी को दूषित कर सकते हैं। दूसरी ओर, इसी कचरे में सोना, तांबा और एल्युमीनियम जैसी कीमती धातुएँ तथा कई उपयोगी पदार्थ भी पाए जाते हैं, लेकिन इन पदार्थों को पुनर्चक्रण के माध्यम से दोबारा प्राप्त किया जा सकता है। इससे जहां एक ओर प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है, वहीं पर नए कच्चे माल(रा-मैटिरियल) की आवश्यकता कम होती है। ई-कचरे को खुले में जलाने या असुरक्षित तरीके से तोड़ने से पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचता है। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह पुराने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को अधिकृत संग्रह केंद्रों या पंजीकृत पुनर्चक्रणकर्ताओं तक पहुँचाए और मनुष्यों, अन्य जीवों तथा प्रकृति के स्वास्थ्य की रक्षा में योगदान दे।

ई-कचरे की स्थिति:- विश्व और भारत-

संयुक्त राष्ट्र की ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर रिपोर्ट-2024 के अनुसार, वर्ष 2022 में दुनिया भर में लगभग 62 मिलियन टन यानी 6.2 करोड़ टन ई-कचरा उत्पन्न हुआ। वैश्विक स्तर पर प्रति व्यक्ति औसतन 7.8 किलोग्राम ई-कचरा पैदा हुआ।

चिंताजनक बात यह है कि कुल ई-कचरे में से केवल 22.3 प्रतिशत का ही औपचारिक रूप से संग्रह और पुनर्चक्रण किया गया। शेष लगभग 77.7 प्रतिशत ई-कचरे का उचित प्रबंधन नहीं हो सका और उसका बड़ा हिस्सा अनौपचारिक क्षेत्रों या कचरा भराव स्थलों तक पहुँच गया। इतना ही नहीं, आज हमारा देश भारत भी ई-कचरे की समस्या से गंभीर रूप से प्रभावित है। दुनिया में चीन और अमेरिका के बाद भारत को ई-कचरा उत्पन्न करने वाले प्रमुख देशों में तीसरे स्थान पर बताया जाता है। भारत में ई-कचरे की मात्रा के संबंध में लगभग 4.5 मिलियन टन यानी 45 लाख टन प्रतिवर्ष का आँकड़ा सामने आया है। उल्लेखनीय है कि हमारे देश में ई-कचरे का एक बड़ा हिस्सा अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाले कबाड़ी और अन्य लोगों द्वारा संसाधित किया जाता है। उपलब्ध अनुमानों में यह हिस्सा लगभग 80 से 90 प्रतिशत तक बताया गया है। इस काम में सुरक्षा के उचित उपाय नहीं अपनाए जाने पर काम करने वाले लोगों के स्वास्थ्य और पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुँच सकता है। ई-कचरे की बढ़ती मात्रा इस समस्या को और गंभीर बना रही है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2010 से 2022 के बीच ई-कचरे में हुई वृद्धि की दर उसके औपचारिक संग्रह और पुनर्चक्रण की वृद्धि दर से लगभग पाँच गुना अधिक रही। ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर-2024 के अनुमान के अनुसार, यदि यही स्थिति बनी रही, तो वर्ष 2030 तक दुनिया में ई-कचरे की मात्रा बढ़कर लगभग 82 मिलियन टन यानी 8.2 करोड़ टन प्रतिवर्ष हो सकती है।देसी उत्पाद खोजें

ई-कचरा कम करने के लिए क्या करें?

भारत जैसे तेजी से डिजिटल होते देश में मोबाइल फोन, कंप्यूटर, घरेलू उपकरणों और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान का इस्तेमाल लगातार बढ़ रहा है। इसलिए ई-कचरे को केवल सफाई की समस्या मानना उचित नहीं है। यह पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों की बचत, जनस्वास्थ्य और जिम्मेदारी के साथ उपभोग करने से जुड़ा विषय है। वास्तव में, ई-कचरे को कम करने के लिए हमें इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का इस्तेमाल सोच-समझकर करना चाहिए। मोबाइल फोन, लैपटॉप या अन्य उपकरणों में छोटी-मोटी खराबी आने पर उन्हें फेंकने के बजाय उनकी मरम्मत करानी चाहिए। केवल नया मॉडल आने या फैशन के कारण पुराने उपकरणों को बदलने से बचना चाहिए। पुराने मोबाइल, चार्जर, बैटरी, कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं को सामान्य कूड़े में डालने के बजाय अधिकृत ई-कचरा संग्रह केंद्रों या संबंधित निर्माता की वापसी योजना के माध्यम से पुनर्चक्रण के लिए देना चाहिए।यदि कोई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण अभी भी इस्तेमाल करने योग्य है, तो उसे जरूरतमंद व्यक्ति को देकर या दान करके उसका उपयोगी जीवन बढ़ाया जा सकता है। नए इलेक्ट्रॉनिक सामान की खरीदारी करते समय उसकी गुणवत्ता, टिकाऊपन और मरम्मत कराने की सुविधा का ध्यान रखना चाहिए। पुनर्चक्रण के लिए मोबाइल, कंप्यूटर या अन्य उपकरण देने से पहले उनमें मौजूद निजी जानकारी को सुरक्षित तरीके से मिटाना भी आवश्यक है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि ई-कचरे की समस्या का समाधान केवल सरकार या पुनर्चक्रण केंद्रों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसमें प्रत्येक नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण है। हमें कम खरीदने, उपकरणों का लंबे समय तक उपयोग करने, खराब होने पर उनकी मरम्मत कराने और बेकार होने पर उचित पुनर्चक्रण अपनाने की आदत डालनी होगी। हमारी छोटी-छोटी जिम्मेदारियाँ पर्यावरण को सुरक्षित रखने, प्राकृतिक संसाधनों को बचाने और आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ धरती देने में बड़ा योगदान दे सकती हैं। वास्तव में, हमें जरूरत के अनुसार कम से कम इलेक्ट्रॉनिक सामान खरीदना चाहिए, उन्हें लंबे समय तक इस्तेमाल करना चाहिए, खराब होने पर मरम्मत करानी चाहिए और बेकार होने पर सही तरीके से उनका पुनर्चक्रण करना चाहिए।

डिजिटल चक्रव्यूह: तकनीक की दुनिया में कितनी सुरक्षित है आपकी निजता?

आज मनुष्य की डिजिटल पहचान उसके भौतिक अस्तित्व जितनी ही महत्वपूर्ण हो गई है। हम क्या खोजते हैं, कहाँ जाते हैं, क्या खरीदते हैं, किन लोगों से संवाद करते हैं और किन विषयों में रुचि रखते हैं—इन सबका एक डिजिटल निशान पीछे छूटता जाता है। ऐसे में प्रश्न केवल यह नहीं है कि हमारी जानकारी किसके पास है, बल्कि यह भी है कि उस जानकारी पर हमारा कितना नियंत्रण है। इसी संदर्भ में डिजिटल युग में निजता का प्रश्न व्यक्ति की स्वतंत्रता, गरिमा और स्वायत्तता से जुड़ी एक गंभीर संवैधानिक और सामाजिक चुनौती बनकर उभरा है।

निजता व्यक्ति का वह अधिकार है जिसके माध्यम से वह अपनी व्यक्तिगत जानकारी, पहचान और निजी जीवन तक दूसरों की पहुँच को नियंत्रित करता है। भारत में इस अधिकार को ऐतिहासिक महत्व तब मिला जब सर्वोच्च न्यायालय ने के. एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ (2017) मामले में निजता को संविधान द्वारा संरक्षित मौलिक अधिकार माना। न्यायालय ने निजता को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता, गरिमा तथा स्वायत्तता से जोड़ा। साथ ही यह स्पष्ट किया कि निजता पर किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप कानून, वैध उद्देश्य और आनुपातिकता जैसे संवैधानिक मानकों के अनुरूप होना चाहिए। डिजिटल तकनीक के विस्तार ने इस अधिकार का दायरा और उसकी चुनौतियाँ दोनों व्यापक कर दी हैं।

सबसे पहले, राज्य की बढ़ती निगरानी क्षमता निजता के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। चेहरे की पहचान, बायोमेट्रिक पहचान, स्थान की निगरानी और डिजिटल संचार के विश्लेषण जैसी तकनीकें अपराध नियंत्रण तथा राष्ट्रीय सुरक्षा में उपयोगी हो सकती हैं। किंतु यदि इनके प्रयोग पर पर्याप्त कानूनी सीमाएँ और स्वतंत्र निगरानी न हो, तो यही तकनीक व्यापक निगरानी का माध्यम बन सकती है। इसलिए सुरक्षा और निजता के बीच संतुलन स्थापित करना लोकतांत्रिक शासन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।



दूसरी ओर, निजी डिजिटल कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर व्यक्तिगत डेटा का संग्रह भी चिंता का विषय है। सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स, सर्च इंजन और मोबाइल एप्लिकेशन हमारे व्यवहार से संबंधित विशाल मात्रा में डेटा एकत्र करते हैं। अलग-अलग स्रोतों से प्राप्त इन सूचनाओं को जोड़कर व्यक्ति की विस्तृत व्यवहारगत प्रोफाइल तैयार की जा सकती है। इससे सेवाओं को व्यक्तिगत बनाना संभव होता है, लेकिन यही प्रक्रिया उपभोक्ता की पसंद, व्यवहार और निर्णयों को प्रभावित करने की क्षमता भी पैदा करती है। इस प्रकार डेटा केवल सूचना नहीं रह जाता, बल्कि आर्थिक और सामाजिक शक्ति का स्रोत बन जाता है।

निजता का संकट केवल बड़े डेटा-संग्रह तक सीमित नहीं है। डॉक्सिंग जैसी घटनाओं में किसी व्यक्ति का पता, फोन नंबर, तस्वीर या अन्य निजी जानकारी उसकी अनुमति के बिना सार्वजनिक कर दी जाती है। इससे ऑनलाइन उत्पीड़न, धमकी और शारीरिक सुरक्षा के खतरे पैदा हो सकते हैं। इसी प्रकार डीपफेक तकनीक ने पहचान और प्रतिष्ठा के दुरुपयोग को नया आयाम दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से किसी व्यक्ति के चेहरे या आवाज का इस्तेमाल कर ऐसी सामग्री तैयार की जा सकती है जो वास्तविक प्रतीत होती है। इससे निजता के साथ-साथ व्यक्ति की गरिमा और प्रतिष्ठा भी प्रभावित हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, डेटा उल्लंघन और साइबर हमले नागरिकों की निजता के लिए गंभीर खतरा हैं। वित्तीय जानकारी, स्वास्थ्य रिकॉर्ड, पहचान संबंधी दस्तावेज और अन्य संवेदनशील सूचनाएँ चोरी होने पर पहचान की चोरी, वित्तीय धोखाधड़ी और ब्लैकमेल जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। समस्या को और जटिल बनाती है

एल्गोरिद्मिक प्रोफाइलिंग। जब स्वचालित प्रणालियाँ व्यक्तिगत डेटा के आधार पर लोगों के बारे में निर्णय लेने लगती हैं, तो गलत या पक्षपाती डेटा भेदभावपूर्ण परिणाम उत्पन्न कर सकता है। यदि ऐसी निर्णय-प्रक्रियाएँ पारदर्शी न हों, तो व्यक्ति के लिए अपने विरुद्ध लिए गए निर्णय को समझना या चुनौती देना कठिन हो जाता है।

डिजिटल अर्थव्यवस्था की एक अन्य विशेषता यह है कि डेटा अब एक ही संस्था तक सीमित नहीं रहता। सरकारें, निजी कंपनियाँ, विज्ञापन एजेंसियाँ, एप डेवलपर, क्लाउड सेवा प्रदाता और तकनीकी विक्रेता किसी व्यक्ति के डेटा की अलग-अलग कड़ियों से जुड़े हो सकते हैं। परिणामस्वरूप डेटा के प्रवाह की पूरी श्रृंखला और जिम्मेदारी तय करना कठिन हो जाता है। सीमा-पार डेटा प्रवाह इस समस्या को और बढ़ाता है, क्योंकि किसी नागरिक की जानकारी एक देश में एकत्र होकर दूसरे देश में संग्रहीत या संसाधित हो सकती है।

निजता की रक्षा में सबसे बड़ी व्यावहारिक कठिनाइयों में से एक 'सहमति की थकान' है। उपयोगकर्ता लंबी और जटिल गोपनीयता नीतियों को पढ़े बिना 'I Agree' पर क्लिक कर देते हैं। ऐसी स्थिति में सहमति कानूनी औपचारिकता तो बन जाती है, लेकिन वास्तविक रूप से सूचित विकल्प नहीं रह जाती। दूसरी चुनौती यह है कि तकनीकी नवाचार अक्सर नियमन से तेज गति से आगे बढ़ता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और नई डेटा-विश्लेषण तकनीकें ऐसे जोखिम पैदा कर सकती हैं जिनकी कल्पना मौजूदा कानूनों के निर्माण के समय नहीं की गई थी।

हालाँकि, निजता की रक्षा का अर्थ यह नहीं है कि राज्य की सुरक्षा आवश्यकताओं या तकनीकी नवाचार को पूरी तरह सीमित कर दिया जाए। अपराध, आतंकवाद और राष्ट्रीय सुरक्षा से निपटने के लिए कुछ परिस्थितियों में सूचना तक पहुँच आवश्यक हो सकती है। चुनौती यह है कि ऐसी शक्तियों का प्रयोग कानूनसम्मत, आवश्यक और आनुपातिक हो तथा उनके दुरुपयोग पर प्रभावी निगरानी और उपचार की व्यवस्था हो।

इस दिशा में भारत ने डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 के माध्यम से महत्वपूर्ण कदम उठाया है। आवश्यकता अब इसके प्रभावी क्रियान्वयन, मजबूत संस्थागत निगरानी और नागरिकों के लिए सरल शिकायत निवारण व्यवस्था की है। साथ ही, 'प्राइवेसी बाय डिजाइन' को डिजिटल शासन और निजी क्षेत्र की तकनीकी संरचना का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। इसका अर्थ है कि किसी तकनीक के निर्माण के बाद निजता की सुरक्षा जोड़ने के बजाय शुरुआत से ही डेटा न्यूनतमकरण, सुरक्षित भंडारण, एन्क्रिप्शन और सीमित डेटा-संग्रह जैसे सिद्धांतों को अपनाया जाए।

डिजिटल प्लेटफॉर्मों की जवाबदेही भी बढ़ाई जानी चाहिए। डॉक्सिंग, डीपफेक और पहचान के दुरुपयोग की शिकायतों के लिए त्वरित तथा सुलभ व्यवस्था होनी चाहिए। साथ ही नागरिकों को डिजिटल साक्षरता के माध्यम से यह समझाना आवश्यक है कि वे अपनी व्यक्तिगत जानकारी को कैसे सुरक्षित रखें। मजबूत पासवर्ड, बहु-स्तरीय प्रमाणीकरण, गोपनीयता सेटिंग का उचित उपयोग और संदिग्ध लिंक से सावधानी जैसे उपाय व्यक्तिगत सुरक्षा को मजबूत कर सकते हैं।

अंततः, डिजिटल युग में निजता को केवल डेटा की सुरक्षा के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। यह व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, पहचान और आत्मनिर्णय के अधिकार की रक्षा का प्रश्न है। जिस प्रकार लोकतंत्र में नागरिक को अपने विचार रखने की स्वतंत्रता आवश्यक है, उसी प्रकार डिजिटल लोकतंत्र में अपने डेटा पर नियंत्रण भी आवश्यक है। अतः भारत को ऐसी डिजिटल व्यवस्था विकसित करनी होगी जहाँ तकनीक शक्ति का माध्यम हो, नियंत्रण का नहीं; डेटा विकास का साधन हो, शोषण का नहीं; और सुरक्षा के साथ नागरिक की स्वतंत्रता तथा निजता भी समान रूप से संरक्षित रहे।



करवा चौथ: प्रेम, विश्वास और भारतीय संस्कृति का अनुपम पर्व

भारत त्योहारों और परंपराओं का देश है। यहाँ प्रत्येक पर्व अपने भीतर कोई न कोई सांस्कृतिक संदेश, सामाजिक मूल्य और भावनात्मक संबंध समेटे हुए है। इन्हीं विशिष्ट पर्वों में करवा चौथ का विशेष स्थान है। यह पर्व केवल व्रत, पूजा और चंद्रदर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि पति-पत्नी के बीच प्रेम, विश्वास, समर्पण और पारिवारिक एकता का प्रतीक भी है। कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाने वाला यह त्योहार विशेष रूप से उत्तर भारत में बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

करवा चौथ के दिन विवाहित महिलाएँ अपने पति की लंबी आयु, अच्छे स्वास्थ्य और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना करते हुए व्रत रखती हैं। सुबह सरगी ग्रहण करने से शुरू होने वाली दिनचर्या शाम की पूजा और चंद्रदर्शन के साथ पूर्ण होती है। इस पर्व की सबसे सुंदर विशेषता यह है कि इसमें धार्मिक आस्था के साथ-साथ प्रेम की सहज अभिव्यक्ति भी दिखाई देती है।

करवा चौथ का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व

करवा चौथ की परंपरा भारतीय लोकजीवन में गहराई से जुड़ी हुई है। 'करवा' मिट्टी के उस पात्र को कहा जाता है, जिसका उपयोग पूजा और जल अर्पित करने में किया जाता है, जबकि 'चौथ' का संबंध चतुर्थी तिथि से है। इस प्रकार पर्व का नाम ही इसकी धार्मिक परंपरा की ओर संकेत करता है।

इस दिन महिलाएँ भगवान गणेश, माता पार्वती और भगवान शिव की पूजा करती हैं। कई स्थानों पर करवा माता की कथा सुनने और सुनाने की परंपरा भी प्रचलित है। मान्यता है कि श्रद्धा और निष्ठा से किया गया व्रत वैवाहिक जीवन में सुख-समृद्धि और मंगल की कामना का माध्यम बनता है।

करवा चौथ से जुड़ी अनेक लोककथाएँ प्रचलित हैं। इनमें सावित्री-सत्यवान की कथा, निष्ठा और साहस की कहानियाँ तथा करवा चौथ की पारंपरिक व्रत-कथाएँ प्रमुख हैं। इन कथाओं के अलग-अलग क्षेत्रीय रूप मिलते हैं, लेकिन उनका केंद्रीय भाव प्रेम, धैर्य, संकल्प और विपरीत परिस्थितियों में भी विश्वास बनाए रखना है।

सरगी से चंद्रदर्शन तक: आस्था से भरा दिन

करवा चौथ की शुरुआत प्रायः सूर्योदय से पहले सरगी ग्रहण करने से होती है। कई परिवारों में सास अपनी बहू को सरगी देती हैं, जिसमें फल,

मिठाइयाँ, मेवे और अन्य खाद्य पदार्थ शामिल होते हैं। यह परंपरा केवल भोजन देने की रस्म नहीं, बल्कि परिवार में स्नेह, अपनत्व और आशीर्वाद के आदान-प्रदान का भी प्रतीक है।

दिनभर महिलाएँ अपनी श्रद्धा और पारिवारिक परंपरा के अनुसार निर्जला या अन्य निर्धारित नियमों के साथ व्रत रखती हैं। वे नए वस्त्र पहनती हैं, हाथों में मेहंदी रचाती हैं, सोलह श्रृंगार करती हैं और पूजा की तैयारी करती हैं। कई स्थानों पर महिलाएँ समूह में एकत्र होकर करवा चौथ की कथा सुनती हैं तथा पूजा की थाली सजाती हैं।

शाम होते ही सबकी निगाहें चाँद के निकलने पर टिक जाती हैं। चंद्रमा के दर्शन के बाद महिलाएँ पूजा करती हैं और अपनी पारिवारिक परंपरा के अनुसार अर्घ्य अर्पित करती हैं। कई परिवारों में महिलाएँ छलनी से पहले चाँद और फिर पति का चेहरा देखती हैं। इसके बाद पति अपनी पत्नी को जल पिलाकर व्रत खुलवाते हैं। यह दृश्य भारतीय वैवाहिक जीवन की भावनात्मक सुंदरता को अभिव्यक्त करता है।

पति-पत्नी के रिश्ते में प्रेम और साझेदारी

करवा चौथ का वास्तविक महत्व केवल एक दिन के उपवास में नहीं, बल्कि उस भाव में है जो पति-पत्नी को एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदार और संवेदनशील बनाता है। वैवाहिक जीवन केवल सुख के क्षणों का नाम नहीं है। इसमें अनेक चुनौतियाँ, जिम्मेदारियाँ और परिस्थितियाँ आती हैं, जिनका सामना दोनों को मिलकर करना पड़ता है।

ऐसे में करवा चौथ हमें याद दिलाता है कि रिश्तों की मजबूती प्रेम, संवाद, विश्वास और सम्मान से आती है। पति की लंबी आयु की कामना करने वाली पत्नी की भावना जितनी महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण पति का अपनी पत्नी के स्वास्थ्य, इच्छाओं, सपनों और भावनाओं का सम्मान करना भी है।

आज अनेक पति भी अपनी पत्नियों के प्रति प्रेम और एकजुटता व्यक्त करने के लिए व्रत रखते हैं या दिनभर उनके साथ रहते हैं। यह बदलती सोच इस पर्व को पारस्परिक प्रेम और साझेदारी का उत्सव बनाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। आखिरकार, सुखी दांपत्य जीवन एकतरफा त्याग से नहीं, बल्कि दोनों की भागीदारी से बनता है।

बदलते समय में करवा चौथ का नया स्वरूप

समय के साथ त्योहारों को मनाने के तरीकों में भी बदलाव आया है। पहले जहाँ करवा चौथ का स्वरूप मुख्यतः पारिवारिक और पारंपरिक था, वहीं आज इसमें आधुनिक जीवनशैली, फैशन और सोशल मीडिया का प्रभाव भी दिखाई देता है। बाजारों में साड़ियों, लहंगों, आभूषणों, मेहंदी, सौंदर्य प्रसाधनों और पूजा सामग्री की विशेष रौनक रहती है।

डिजिटल युग में लोग दूर रहने वाले जीवनसाथियों के साथ वीडियो कॉल के माध्यम से पूजा और चंद्रदर्शन का आनंद साझा करते हैं। विदेशों में रहने वाले भारतीय परिवार भी अपनी परंपराओं को जीवित रखने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार करवा चौथ भौगोलिक दूरियों के बावजूद भावनात्मक निकटता बनाए रखने का माध्यम बन गया है।

हालाँकि, त्योहार की सुंदरता महँगे कपड़ों, कीमती आभूषणों या सोशल मीडिया पर आकर्षक तस्वीरें साझा करने में नहीं है। उसका वास्तविक सौंदर्य सादगी, स्नेह और पारिवारिक एकता में निहित है। प्रत्येक परिवार अपनी आर्थिक क्षमता, सुविधा और आस्था के अनुसार इस पर्व को मनाए, यही इसकी सहजता और व्यापकता को बनाए रख सकता है।

नारी की आस्था और स्वास्थ्य का सम्मान

करवा चौथ पर चर्चा करते समय महिलाओं के स्वास्थ्य और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को भी महत्व देना आवश्यक है। उपवास धार्मिक

आस्था और व्यक्तिगत विश्वास का विषय है, लेकिन हर व्यक्ति की शारीरिक स्थिति अलग होती है। गर्भवती महिलाओं, मधुमेह से पीड़ित महिलाओं, नियमित दवाएँ लेने वाली महिलाओं या किसी अन्य स्वास्थ्य समस्या से जूझ रही महिलाओं के लिए लंबे समय तक भूखे-प्यासे रहना जोखिमपूर्ण हो सकता है।

ऐसी परिस्थितियों में चिकित्सकीय सलाह लेना और अपनी सेहत को प्राथमिकता देना समझदारी है। किसी महिला पर व्रत रखने का दबाव नहीं होना चाहिए। सच्चा प्रेम और आस्था किसी की सेहत को खतरे में डालने की अपेक्षा नहीं करते।

पति और परिवार के अन्य सदस्यों का दायित्व है कि वे महिला की भावनाओं का सम्मान करें और उसकी सुविधा का ध्यान रखें। यदि कोई महिला स्वास्थ्य कारणों से व्रत नहीं रख पाती, तो इससे उसके प्रेम या समर्पण का मूल्य कम नहीं हो जाता। त्योहार तभी सार्थक बनता है, जब वह खुशी, सम्मान और आत्मीयता का अनुभव कराए।

लोकसंस्कृति, सामाजिक एकता और पारिवारिक संबंध

करवा चौथ भारतीय लोकसंस्कृति का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अलग-अलग राज्यों में इस पर्व की पूजा-विधि, लोकगीतों, वेशभूषा और रीति-रिवाजों में विविधता देखने को मिलती है। कहीं महिलाएँ सामूहिक रूप से पूजा करती हैं, तो कहीं परिवार की बुजुर्ग महिलाएँ नई पीढ़ी को व्रत की परंपराओं और उससे जुड़ी कथाओं के बारे में बताती हैं।

इस तरह यह पर्व पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक ज्ञान के हस्तांतरण का माध्यम बनता है। बच्चे अपने परिवार की परंपराओं को देखते और समझते हैं तथा रिश्तों के प्रति सम्मान और सामूहिक उत्सव का महत्व सीखते हैं।

करवा चौथ के अवसर पर परिवारों में मिलना-जुलना, उपहार देना और एक-दूसरे के प्रति शुभकामनाएँ व्यक्त करना सामाजिक संबंधों को भी मजबूत बनाता है। यदि इन परंपराओं के साथ समानता, सहयोग और सम्मान के मूल्यों को जोड़ा जाए, तो त्योहार का सामाजिक महत्व और बढ़ सकता है।

निष्कर्ष: रस्म से आगे, रिश्तों की गहराई तक

करवा चौथ केवल चाँद के निकलने की प्रतीक्षा का पर्व नहीं, बल्कि उस विश्वास का उत्सव है जो दो व्यक्तियों को जीवन की यात्रा में एक-दूसरे का साथी बनाता है। यह भारतीय संस्कृति की उस परंपरा को सामने लाता है, जिसमें प्रेम, प्रार्थना, पारिवारिक संबंध और मंगलकामना का विशेष स्थान है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम करवा चौथ की परंपराओं को उनके मूल भाव के साथ समझें। पत्नी का समर्पण और पति का सहयोग, दोनों मिलकर वैवाहिक जीवन को सुंदर बनाते हैं। रिश्तों में सम्मान, संवाद, समानता और संवेदनशीलता हो, तो प्रत्येक दिन प्रेम का उत्सव बन सकता है।

चंद्रमा की शीतल चाँदनी में जब पति-पत्नी एक-दूसरे का चेहरा देखते हैं, तो उस क्षण का अर्थ केवल व्रत पूरा होना नहीं होता; वह साथ निभाने, एक-दूसरे की खुशियों का ध्यान रखने और जीवन की हर परिस्थिति में सहयोग करने के संकल्प को भी व्यक्त करता है।

करवा चौथ का सच्चा संदेश यही है—

प्रेम केवल शब्दों या रस्मों में नहीं, बल्कि एक-दूसरे के प्रति सम्मान, विश्वास, देखभाल और जीवनभर साथ निभाने की भावना में बसता है।** यही भावना इस पर्व को परंपरा से आगे बढ़ाकर मानवीय संबंधों का एक सुंदर उत्सव बनाती है।

रिश्तों की मिठास का उत्सव

भारत त्योहारों और परंपराओं का देश है। यहाँ प्रत्येक पर्व अपने साथ प्रेम, आस्था और सामाजिक सद्भाव का संदेश लेकर आता है। इन्हीं त्योहारों में भाई दूज का विशेष महत्व है। दीपावली के बाद मनाया जाने वाला यह पर्व भाई-बहन के पवित्र रिश्ते, आपसी विश्वास और एक-दूसरे के प्रति मंगलकामना का प्रतीक है। इस दिन बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर उनके सुखी, स्वस्थ और दीर्घायु जीवन की कामना करती हैं, वहीं भाई अपनी बहनों के प्रति प्रेम, सम्मान और सहयोग की भावना व्यक्त करते हैं।

भाई दूज को भैया दूज, भाई टीका और यम द्वितीया जैसे नामों से भी जाना जाता है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाने वाला यह त्योहार भारतीय संस्कृति में पारिवारिक रिश्तों की गहराई और आत्मीयता को दर्शाता है।

पौराणिक कथा और धार्मिक मान्यता

भाई दूज से जुड़ी एक प्रसिद्ध पौराणिक कथा भगवान यमराज और उनकी बहन यमुना की है। मान्यता के अनुसार, यमुना अपने भाई यमराज को अपने घर आने का निमंत्रण देती थीं। एक दिन कार्तिक शुक्ल द्वितीया को यमराज अपनी बहन के घर पहुँचे। यमुना ने उनका स्वागत किया, माथे पर तिलक लगाया और प्रेमपूर्वक भोजन कराया। बहन के स्नेह से प्रसन्न होकर यमराज ने उन्हें वरदान माँगने को कहा। यमुना ने कामना की कि इस दिन जो भाई अपनी बहन से तिलक करवाए, उसे सुख और मंगल की प्राप्ति हो।

इसी मान्यता के कारण इस पर्व को यम द्वितीया भी कहा जाता है। यह कथा भाई-बहन के रिश्ते में प्रेम, सम्मान और आत्मीयता के महत्व को उजागर करती है।

तिलक, मिठाई और खुशियों का उत्सव

भाई दूज के दिन घरों में उत्सव का



वातावरण रहता है। बहनें पूजा की थाली सजाती हैं, जिसमें रोली, अक्षत, दीपक और मिठाई रखी जाती है। इसके बाद भाई को तिलक लगाकर आरती उतारी जाती है और उसके मंगलमय जीवन की कामना की जाती है। कई परिवारों में भाई अपनी बहन के घर जाकर भोजन करते हैं। बहनें अपने हाथों से पकवान बनाती हैं और भाई अपनी बहनों को उपहार देकर उनके प्रति स्नेह व्यक्त करते हैं।

हालाँकि, इस पर्व की वास्तविक सुंदरता रस्मों या उपहारों में नहीं, बल्कि उन भावनाओं में छिपी होती है, जो भाई-बहन को एक-दूसरे के करीब लाती हैं। माथे का तिलक केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि प्रेम, विश्वास और शुभकामना का प्रतीक है।

बचपन की यादों से जीवनभर के रिश्ते तक

भाई-बहन का रिश्ता अनोखा होता है। इसमें बचपन की शरारतें, छोटी-छोटी नोकझोंक, रूठना-मनाना और एक-दूसरे के प्रति गहरा लगाव शामिल होता है। कभी खिलौनों को लेकर झगड़ा होता है, तो कभी एक-दूसरे की गलती छिपाने के लिए दोनों साथ खड़े हो जाते हैं। यही छोटी-छोटी यादें आगे चलकर जीवन की अनमोल पूँजी बन जाती हैं।

समय के साथ पढ़ाई, नौकरी, विवाह और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण भाई-बहन अलग-अलग शहरों में रहने लगते हैं। मिलने के अवसर कम हो जाते हैं, लेकिन रिश्तों की आत्मीयता

बनी रहती है। कभी फोन पर बातचीत, कभी त्योहार की शुभकामनाएँ और कभी अचानक हुई मुलाकात बचपन की यादों को फिर ताजा कर देती है।

भाई दूज ऐसा अवसर है, जब भाई-बहन अपने व्यस्त जीवन से समय निकालकर एक-दूसरे के साथ खुशियाँ बाँटते हैं। यह पर्व याद दिलाता है कि रिश्तों को मजबूत बनाए रखने के लिए समय, संवाद और अपनापन सबसे अधिक जरूरी हैं।

बदलते समय में भाई दूज

आज के आधुनिक दौर में त्योहार मनाने के तरीके बदल रहे हैं। डिजिटल माध्यमों ने दूर रहने वाले परिवारों को भी एक-दूसरे से जुड़े रहने का अवसर दिया है। जो भाई-बहन अलग-अलग देशों या शहरों में रहते हैं, वे वीडियो कॉल के माध्यम से तिलक की रस्म और शुभकामनाएँ साझा करते हैं। ऑनलाइन उपहार और मिठाइयाँ भेजने का चलन भी बढ़ा है।

इन बदलावों के बावजूद भाई दूज का मूल भाव आज भी वही है। त्योहार का उद्देश्य दिखावा करना या महँगे उपहार देना नहीं, बल्कि रिश्तों में प्रेम और विश्वास को मजबूत बनाना है। एक स्नेहपूर्ण बातचीत, जरूरत के समय सहायता और कठिन परिस्थितियों में साथ देना किसी भी महँगे उपहार से अधिक मूल्यवान है।

नारी सम्मान और समानता का संदेश

भाई दूज का पर्व हमें भाई-बहन के रिश्ते में प्रेम के साथ सम्मान और समानता का महत्व भी समझाता है। बहन केवल भाई की मंगलकामना करने वाली नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं, सपनों और स्वतंत्र पहचान रखने वाली व्यक्ति भी है। उसकी शिक्षा, करियर और निर्णयों का सम्मान करना भाई के स्नेह की सच्ची अभिव्यक्ति है।

इसी प्रकार बहन भी अपने भाई के सुख-दुःख में सहभागी बनती है। आज आवश्यकता है कि भाई-बहन एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदारी और सहयोग की भावना रखें। यह रिश्ता किसी एक के त्याग पर नहीं, बल्कि दोनों के पारस्परिक सम्मान और विश्वास पर आधारित होना चाहिए।

उपहार से बढ़कर है भावनाओं का मूल्य

वर्तमान समय में त्योहारों के साथ बाजारवाद का प्रभाव भी बढ़ा है। मिठाइयों, कपड़ों, आभूषणों और उपहारों की खरीदारी से बाजारों में रौनक दिखाई देती है। उपहार देना प्रेम व्यक्त करने का एक सुंदर तरीका हो सकता है, लेकिन इसे आर्थिक क्षमता या सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ना उचित नहीं है।

भाई दूज की सार्थकता इस बात में नहीं है कि भाई अपनी बहन को कितना महँगा उपहार देता है या बहन किस प्रकार का आयोजन करती है। इसका महत्व उस आत्मीयता में है, जो दोनों के बीच बनी रहती है। एक स्नेहपूर्ण बातचीत, कठिन समय में दिया गया सहयोग और बिना किसी स्वार्थ के की गई सहायता किसी भी महँगे उपहार से अधिक मूल्यवान हो सकती है।

हमें ऐसे त्योहारों को सरल, आनंदमय और सभी के लिए सहज बनाना चाहिए, ताकि आर्थिक स्थिति के कारण कोई परिवार उत्सव मनाने में संकोच न करे।

रिश्तों की मिठास बनाए रखने का संकल्प

भाई दूज केवल माथे पर तिलक लगाने और मिठाई खिलाने का त्योहार नहीं, बल्कि जीवनभर साथ निभाने और एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील बने रहने का संदेश है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि जीवन की भागदौड़ में अपने रिश्तों के लिए समय निकालना कितना जरूरी है।

समय बदल सकता है, दूरियाँ बढ़ सकती हैं और जीवन की परिस्थितियाँ अलग हो सकती हैं, लेकिन सच्चे प्रेम की डोर हमेशा मजबूत रह सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने संबंधों को संवाद, विश्वास और सम्मान से सींचते रहें।

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/26-28

विजयादशमी: धू-धू कर जला रावण

विजयादशमी का पर्व पूरे हर्षोल्लास, श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। असत्य पर सत्य और अधर्म पर धर्म की विजय के प्रतीक इस त्योहार पर रावण दहन देखने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्र हुए। जैसे ही रावण का विशाल पुतला धू-धू कर जलने लगा, पूरा वातावरण जय श्रीराम के उद्घोष से गूंज उठा। आतिशबाजी और उत्साह के बीच लोगों ने बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश आत्मसात किया। वहीं, भरत मिलाप के भावुक दृश्य ने श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। भाई-भाई के प्रेम, त्याग और समर्पण की इस अनुपम झांकी को देखकर लोगों की आँखें नम हो गईं।

विजयादशमी भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पर्व है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इसी दिन भगवान श्रीराम ने लंकापति रावण का वध कर माता सीता को उसके बंधन से मुक्त कराया था। तभी से यह पर्व अन्याय, अहंकार और बुराई के अंत तथा सत्य, धर्म और सदाचार की विजय का प्रतीक माना जाता है। रावण दहन की परंपरा हमें यह संदेश देती है कि चाहे बुराई कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंततः विजय सत्य और धर्म की ही होती है।

कार्यक्रम के दौरान रामलीला के कलाकारों ने भगवान श्रीराम, लक्ष्मण, माता सीता, हनुमान और रावण के पात्रों का सजीव चित्रण किया। राम-रावण युद्ध के प्रसंग ने दर्शकों को रामायण की गौरवशाली कथा से जोड़ दिया। रावण के पुतले में आग लगते ही लोगों ने तालियों और जयकारों के साथ भगवान श्रीराम की विजय का उत्सव मनाया। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी में पर्व को लेकर खास उत्साह दिखाई दिया।

विजयादशमी के अवसर पर आयोजित भरत मिलाप ने कार्यक्रम को भावनात्मक ऊँचाई प्रदान की। भगवान श्रीराम के वनवास से लौटने पर भरत और श्रीराम के मिलन का दृश्य भाईचारे, त्याग और पारिवारिक प्रेम का अनुपम उदाहरण है। भरत ने राजसुख का मोह त्यागकर श्रीराम की चरण-



पादुकाओं को सिंहासन पर रखकर शासन किया था। उनका यह समर्पण भारतीय परंपरा में आदर्श भाई के रूप में सदैव स्मरण किया जाता है। भरत मिलाप के मंचन के दौरान श्रद्धालु भावुक हो उठे और पूरा वातावरण भक्ति तथा आत्मीयता से भर गया।

यह पर्व केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों को मजबूत करने का अवसर भी है। रावण के दस सिर मनुष्य के भीतर मौजूद अहंकार, क्रोध, लोभ और अन्य बुराइयों पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा देते हैं। वहीं, श्रीराम का आदर्श जीवन हमें मर्यादा, कर्तव्य, सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने की सीख देता है।

विजयादशमी का वास्तविक संदेश तभी सार्थक होगा, जब हम अपने भीतर की बुराइयों को समाप्त कर समाज में प्रेम, सद्भाव और नैतिकता को बढ़ावा देंगे। रावण का पुतला जलाने के साथ हमें अहंकार, अन्याय और वैमनस्य का भी त्याग करना चाहिए। यही विजयादशमी की सच्ची भावना और भगवान श्रीराम के आदर्शों के प्रति हमारी वास्तविक श्रद्धा है।

विजयादशमी का पर्व हमें याद दिलाता है कि बुराई चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, सत्य, प्रेम और धर्म के सामने उसकी पराजय निश्चित है।

डाक टिकट

पता